कोरोना महामारी का पर्यावरण पर प्रभाव

प्रा. डॉ. शहनाज रफीक शेख
यशवंत महाविद्यालय वायगांव (नि.), वर्धा.
9970876751
shahanaj.ymy@ gmail.com

सारांश:-

आज कोरोना जैसी वैश्विक महामारी और पर्यावरणीय विसंगतियों को दूर करने के लिए विशेष मूलभूत प्रयास आवश्यक है। इस बीमारी की तरह पर्यावरणीय समस्या भी वैश्विक है। इसलिए स्थानीय सेवाओं और रोजगार को बढ़ावा देने के साथ-साथ वैश्विक संस्थाओं के सहयोग और निवेश को भी मजबूत किया जाना आवश्यक है। न केवल हरित अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय नवीनीकरण से जुड़े कार्यक्रम को बढ़ावा देने की जरूरत है,बल्कि व्यक्तिगत कानूनी प्रबंधकीय स्तर पर भी परिस्थितिकी प्रबंधन व संरक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन तमाम प्रयासों, नवाचारों,पारदर्शिता जवाबदेही और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति के सहारे हम इस संकट से उबरने में कामयाब हो सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अपनी एक रिपोर्ट में इस बात की पुष्टि भी कर चुका है कि मनुष्यों में हर 4 महीने में एक नई संक्रामक बीमारी सामने आती है। इन बीमारियों में से करीब 75 फीसद बीमारी जानवरों से आती है । इसके अतिरिक्त इंसान यह भूलता जा रहा है कि जैव विविधता को चोट पहुंचाना कितना खतरनाक हो सकता है । आज आधुनिक वैज्ञानिकता का दंभ भरने वाली तमाम आर्थिक शक्तियां इस बीमारी के आगे बेबस है। अगर हम मनुष्य और पर्यावरण के बीच संतुलन चाहते हैं तो अपनी जीवनशैली, नैसर्गिक उपयोगिता को इस तरह बनाना होगा जिससे प्रकृति पर नकारात्मक प्रभाव ना पड़े।

परिचय:-

मनुष्य और पर्यावरण के बीच संतुलन आवश्यक है।कई पर्यावरण विदों का मानना है कि,कोरोना वायरस मनुष्य और प्रकृति के बीच पैदा हुए असंतुलन का दुष्परिणाम है। वैज्ञानिकों का कहना है कि अत्यधिक मांस का उत्पादन,रोगानुरोधी प्रतिरोध और बढ़ते वैश्विक तापमान जैसे कारक वन्य जनित विषाणुओं को मनुष्यों में फैलने और भयावह रूप धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। साथ ही जलवायु संकट, विषाणु जनित रोगों से लड़ने के प्रति हमारी प्रतिरोधक क्षमता भी काम कर रही है। दरअसल विगत कुछ दशकों से हो रहे परिस्थितिकीय परिवर्तन, बेरोकटोक आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों के बेतहाशा दोहन ने परिस्थितिकीय तंत्र के अनुचित तथा असंतुलनिय प्रयोगों को बढ़ावा दिया है। कोरोना हमारे से उत्पन्न अल्पकालिक पर्यावरणीय सुधार से अधिक संतुष्ट होने के बजाए मानव प्रकृति और आर्थिक विकास के अंतर्संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है।

लॉकडाउन में पर्यावरण का परिवर्तित दृश्य:-

कोरोना महामारी से भयाक्रांत समूचे विश्व में लॉकडाउन ने पर्यावरण को स्वस्थ होने का अवकाश दे दिया है। हवा का जहर क्षीण हो गया और नदियों का जल निर्मल। भारत में जिस गंगा को साफ करने के अभियान 45 साल से चल रहे थे और बीते 5 साल में ही करीब 20,000 करोड रुपए खर्च करने पर भी मामूली सफलता दिख रही थी। उस गंगा को 3 हफ्ते के लॉकडाउन ने निर्मल बना दिया। इतना ही नहीं चंडीगढ़ से हिमाचल की हिमालय की चोटियां दिखने लगी,जब पूरी दुनिया पर्यावरण और विकास के संतुलन पर उतनी ही गंभीरता से सोचे जितना कोरोना संकट से निपटने में सोच रही है। बड़े पैमाने पर होने वाली गतिविधियों ने हमारे शहरों की हवा को कितना जहरीला और नदियों को कितना प्रदूषित किया किंतु लाकडाउन में इसमें जो सुधार हुआ वह आश्चर्यजनक था।

कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव:-

कोविड-19 के कारण हुए वैश्विक व्यवधान ने पर्यावरण और जलवायु पर कई प्रभाव डाले हैं।आवाजाही पर प्रतिबंध और सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों की एक महत्वपूर्ण मंदी के कारण दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जल प्रदूषण में कमी के साथ कई शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार हुआ है। इसके अलावा पीपीई (जैसे फेस मास्क, हैंड ग्लव्स आदि) के बढ़ते उपयोग उनके बेतरतीब निपटान और भारी मात्रा में अस्पताल के कचरे के उत्पादन से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण पर कोविड-19 के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़े हैं।

अ) पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव:-

1) वायु प्रदूषण और जीएचजी उत्सर्जन में कमी:-

कोरोना काल में उद्योग परिवहन और कंपनियां बंद हो गई। इसने ग्रीन हाउस गैसों (जीएचजी) के उत्सर्जन में अचानक गिरावट ला दी है। यह माना जाता है कि वाहन और विमानन उत्सर्जन के प्रमुख योगदान कर्ता है और परिवहन क्षेत्र के जीएचजी उत्सर्जन में क्रमशः लगभग 72 प्रतिशत और 11 प्रतिशत का योगदान करते हैं। कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए वैश्विक स्तर पर कई देशों ने अंतरराष्ट्रीय यात्रियो को प्रतिबंधित कर दिया है। कुल मिलाकर, जीवाश्म ईंधन की बहुत कम खपत जीएचजी उत्सर्जन को कम करती है, जो वैश्विक जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करती है। इसके अलावा लॉकडाउन के दौरान ऊर्जा की मांग के कारण वैश्विक कोयले की खपत भी कम हुई है।

2) जल प्रदूषण में कमी:-

लॉकडाउन अवधि के दौरान प्रदूषण के प्रमुख औद्योगिक स्त्रोत सिकुड़ गए या पूरी तरह से बंद हो गए थे। जिससे प्रदूषण भार को कम करने में मदद मिली। उदाहरण के लिए,भारत में लॉक डाउन तालाबंदी के दिनों में औद्योगिक प्रदूषण न होने के कारण गंगा और यमुना नदी का जल स्वच्छ निर्मल हो गया। बांग्लादेश, मलेशिया, थाईलैंड,मालदीव और इंडोनेशिया के समुद्र तट क्षेत्रों में भी जल प्रदूषण कम हुआ। यही दिनों में ट्यूनीशिया में भोजन की बर्बादी की मात्रा कम हो गई, जो अंततः मिट्टी और जल प्रदूषण को कम करती है।

3) ध्वनि प्रदूषण में कमी:-

ध्वनि प्रदूषण विभिन्न मानवीय गतिविधियों (जैसे मशीनों, वाहनों, निर्माण कार्य) से उत्पन्न ध्वनि का ऊंचा स्तर है जिससे मानव और अन्य जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यह बताया गया है कि, विश्व स्तर पर लगभग 360 मिलियन लोगों को ध्वनि प्रदूषण के कारण श्रवण हानी का खतरा है। हालांकि क्वारंटाइन और लॉकडाउन उपायों के लिए जरूरी है कि लोग घर पर रहे और दुनिया भर में महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों और संचार को कम करें जिससे, अंतत अधिकांश शहरों में शोर का स्तर कम हो गया।

ब) पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव: -

1) जैव चिकित्सा अपशिष्ट उत्पादन में वृद्धि:-

कोविड-19 के प्रकोप के बाद से विश्व स्तर पर चिकित्सा अपशिष्ट उत्पादन में वृद्धि हुई जो सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक बड़ा खतरा है। संदिग्ध कोविड-19 रोगियों के नमूनों संग्रह के लिए निदान बड़ी संख्या में रोगियों का उपचार और कीटाणु शोधन उद्देश्य अस्पतालों से बहुत सारे संक्रामक और जैव चिकित्सा अपशिष्ट उत्पन्न होते हैं।उदाहरण के लिए,चीन में वुहान में प्रकोप के दौरान हर दिन 240 मीट्रिक टन से अधिक चिकित्सा कचरे का उत्पादन किया जो सामान्य समय से लगभग 190 मीटर अधिक है। फिर से भारत के अमदाबाद शहर में लॉकडाउन के पहले चरण के समय चिकित्सा अपशिष्ट उत्पादन की मात्रा 550-600 कि ग्रा /दिन से बढ़कर लगभग 1000 किग्रा/दिन कर दी गई है। कोविड-19 के कारण बांग्लादेश की राजधानी ढाका में प्रतिदिन लगभग 206 मिलियन टन चिकित्सा अपशिष्ट उत्पन्न होता है।इसके अलावा मनीला कुआलालंपुर, हनोई और बैंकॉक जैसे अन्य शहरों में भी इसी तरह की वृद्धि हुई है। जो महामारी से पहले की तुलना में प्रति दिन 154 - 280 मीटर टन अधिक चिकित्सा अपशिष्ट का उत्पादन करती है। अस्पतालों से उत्पन्न कचरे (जैसे सुई, सीरींज, पट्टी,मास्क, दस्ताने, इस्तेमाल किए गए ऊतक और छोड़ी गई दवाए आदि) को आगे संक्रमण और पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए ठीक से प्रतिबंधित किया जाना चाहिए, जो अब विश्व स्तर पर चिंता का विषय है।

2) सुरक्षा उपकरण में बेतरतीब निपटान:-

वर्तमान में वायरल संक्रमण से बचाव के लिए लोग फेस मास्क, हैंड ग्लव्स, और अन्य सुरक्षा उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं,जिससे स्वास्थ्य संबंधी कचरे की मात्रा बढ़ जाती है। यह बताया गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में घरेलू स्तर पर पीपीई के उपयोग में वृद्धि के कारण कचरे की मात्रा बढ़ रही है। कोविड-19 के बाद से दुनिया भर में प्लास्टिक आधारित पीपीई का उत्पादन और उपयोग बड़ा है। हालांकि संक्रामक अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जानकारी की कमी के कारण अधिकांश लोग इन्हें खुले स्थानों में और कुछ मामलों में घरेलू कचरे के साथ फेक देते हैं। इन कचरे के बेतरतीब डंपिंग से पानी के रास्ते में रुकावट पैदा होती है और पर्यावरण प्रदूषण बिगड़ता है। यह बताया गया है कि, फेस मास्क और अन्य प्लास्टिक आधारित सुरक्षात्मक उपकरण पर्यावरण में माइक्रोप्लास्टिक फाइबर के संभावित स्रोत है। आमतौर पर पॉलीप्रोफाइलीन का उपयोग एन -95 मास्क बनाने के लिए किया जाता है और टाइवेक का उपयोग सुरक्षात्मक सूट, दस्ताने और मेडिकल फेसशील्ड के लिए किया जाता है, जो लंबे समय तक बना रह सकता है और पर्यावरण के लिए विषाक्त तत्वों को छोड़ सकता है। हालांकि, विशेषज्ञ और जिम्मेदार अधिकारी घरेलू जैविक कचरे और प्लास्टिक आधारित सुरक्षात्मक उपकरण के उचित

निपटान और अलगाव के लिए सुझाव देते हैं लेकिन इन कचरे को मिलाने से रोग संक्रमण तथा अपशिष्ट श्रमिकों के वायरस के संपर्क में आने का खतरा भी बढ़ जाता है।

3) नगरपालिका ठोस अपशिष्ट उत्पादन और पुनर्चक्रण में कमी:-

नगरपालिका अपशिष्ट (जैविक और अकार्बनिक दोनों) के उत्पादन में वृद्धि का पर्यावरण पर वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। हालांकि अपशिष्ट पुनर्चक्रण प्रदूषण को रोकने,ऊर्जा बचाने और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का प्रभावी तरीका है। लेकिन महामारी के कारण कई देशों ने वायरल संक्रमण के संचरण को कम करने के लिए अपशिष्ट पुनर्चक्रण गतिविधियों को स्थगित कर दिया। उदाहरण के लिए यू.एस.ए ने कई शहरों (लगभग 46%) में रीसाइकलिंग कार्यक्रमों को प्रतिबंधित कर दिया,क्योंकि सरकार रीसाइकलिंग सुविधाओं में कोविड-19 के फैलने के जोखिम से चिंतित थी। यूनाइटेड किंगडम, इटली और अन्य यूरोपीय देशों ने भी संक्रमित निवासियों से अपने कचरे को छांटने से प्रतिबंधित कर दिया। कुल मिलाकर नियमित नगरपालिका अपशिष्ट प्रबंधन कचरे की वसूली और पुनर्चक्रण गतिविधियों में व्यवधान, दुनिया भर में लैंडफिलिंग और पर्यावरण प्रदूषकों में वृद्धि के कारण है।

4) कोरोना काल में ऑक्सीजन की कमी:-

कोविड-19 के दौरान हमने अपने प्रिय जनों के लिए ऑक्सीजन खोजने में बहुत समय बर्बाद किया। अस्पतालों की ऑक्सीजन की टंकीया खाली होने के कारण कई मरीजों की जाने चली गई। हालात यहां तक पहुंच गए कि देश भर के उद्योगों से ऑक्सीजन के परिवहन को विनियमित करने के लिए अदालतों को संज्ञान लेना पड़ा। यह एक ऐसा यंत्र है जो हवा को अंदर खींचता है और आवश्यकतानुसार ऑक्सीजन देता है। हमने लोगों को एक-एक सांस के लिए तरसते देखा है और हम इसकी कीमत का अनुभव कर चुके हैं प्रकृति से हमें जो ऑक्सीजन मिलती है वह हरित आवरण को बढ़ाने और हवा, यानी हर एक सांस को प्रदूषित न करने पर आधारित है। यह एक ऐसी चीज है, जिसके बारे में हमें ठोस कदम उठाना चाहिए हमें पर्यावरण में ऑक्सीजन के उपस्थिति की गंभीरता को महत्व देना आवश्यक है।

क) पर्यावरण संतुलन के लिए उपाय:-

1) हरित और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग उत्सर्जन को कम करने के लिए लोगों को निजी वाहनों के बजाय सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। कम दूरी में साइकिल का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद है।

2) सतत औद्योगिकरण के लिए कम ऊर्जा, गहन उद्योगो,स्वच्छ ईंधन और प्रौद्योगिकियों के उपयोग और मजबूत ऊर्जा कुशल नीतियों में स्थानांतरित होना आवश्यक है।

3) एक उद्योग के कचरे को दूसरे के कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। एक निश्चित अवधि के बाद राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बाधित किए बिना उत्सर्जन को कम करने के लिए औद्योगिक क्षेत्रों को एक गोलाकार तरीके से बंद कर दिया जाना चाहिए।

4) जहां बड़ी संख्या में लोग काम करते हैं,किसी भी संक्रामक,संचारी रोग के प्रसार को कम करने के लिए उचित दूरी और स्वच्छ वातावरण बनाए रखना चाहिए।

5) दैनिक जरूरतों और वैश्विक आर्थिक विकास को बनाए रखने के लिए महामारी की स्थिति की तरह ऊर्जा की मांग में कटौती करना संभव नहीं है, इसलिए सौर, पवन, जलविद्युत, भूतापीय ताप और बायोमास जैसे नवीनीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग ऊर्जा की मांग को पूरा कर सकता है और जीएचजी उत्सर्जन को कम कर सकता है।

6) जल प्रदूषण की चुनौतियों को नियंत्रित करने के लिए औद्योगिक और नगरपालिका दोनों अपशिष्ट जल को निर्वहन से पहले ठीक से इलाज किया जाना चाहिए। इसके अलावा गैर उत्पादन प्रक्रिया जैसे शौचालय फ्लशिंग और सड़क की सफाई में उपचारित अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग अतिरिक्त पानी की निकासी के बोझ को कम कर सकता है।

7) खतरनाक और संक्रामक चिकित्सा कचरे को दिशा निर्देशों का पालन करके ठीक से प्रबंधित किया जाना चाहिए। सरकार को उचित अपशिष्ट पृथक्करण, हैंडलिंग और निपटान के तरीकों के बारे में विभिन्न जन माध्यमों के माध्यम से व्यापक जागरूकता अभियान लागू करना चाहिए।

8) स्थायी आजीविका सांस्कृतिक संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए परिस्थितिक पर्यटन अभ्यास को मजबूत किया जाना चाहिए। पारिस्थितिक बहाली के लिए एक निश्चित अवधि के बाद पर्यटन स्थल को समय-समय पर बंद कर देना चाहिए।

9) कार्बन पदचिन्ह और वैश्विक कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए हमारे दैनिक जीवन में व्यवहार और इष्टतम खपत या संसाधनों को बदलना आवश्यक है, जैसे स्थानीय रूप से उगाए गए भोजन ले,खाद्य अपशिष्ट से खाद्य बनाएं। उपयोग ना होने पर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को बंद या अनप्लग करें और कम दूरी के लिए कार के बजाए साइकिल का उपयोग करें।

10) स्थाई पर्यावरणीय लक्ष्यों और वैश्विक आवरण संसाधनों की सुरक्षा जैसे की वैश्विक जलवायु और जैविक विविधता को पूरा करने के लिए संयुक्त अंतरराष्ट्रीय प्रयास आवश्यक है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू एन पर्यावरण) जैसे जिम्मेदार अंतरराष्ट्रीय प्राधिकरण को समय उन्मुख नीतियां तैयार करने अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों की व्यवस्था करने और उचित कार्यान्वयन भूमिका निभानी चाहिए।

11) वृक्षों के घनत्व में वृद्धि और परिस्थितिकी तंत्र की देखभाल के फलस्वरूप हमारी धरती कार्बन डाइऑक्साइड को अलग करने में सफल हो पाएगी। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि पेड़ लगाने या परिस्थितिक तंत्र को बहाल करने के लिए हमें पहले प्रकृति और समाज के साथ अपने संबंधों को बहाल करना होगा पेड़ मुख्यता भूमि

पर आधारित होते हैं। कौन इसका मालिक है,कौन इसकी रक्षा करता है और कौन इसे पुनर्जीवित करता है। उपज पर किसका अधिकार होता है यह भी एक महत्वपूर्ण पहलू है।

निष्कर्ष:-

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से महामारी मानव जीवन और वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर रही है जनता पर्यावरण और जलवायु को प्रभावित कर रही है यह हमें याद दिलाता है कि कैसे हमने पर्यावरणीय घटकों की उपेक्षा की है और मानव प्रेरित जलवायु परिवर्तन को लागू किया है। इसके अलावा कोई नई वैश्विक प्रतिक्रिया हमें मानव जाति के लिए खतरे से निपटने के लिए मिलकर काम करना भी सिखाती है। हालांकि पर्यावरण पर कोविड-19 के प्रभाव अल्पकालिक है, संयुक्ता और प्रस्तावित समय उन्मुख प्रयास पर्यावरणीय स्थिरता को मजबूत कर सकते हैं और पृथ्वी को वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से बचा सकते हैं। बेहतर भविष्य के लिए हमें प्रकृति के साथ बिगड़ते रिश्ते सुधारने होंगे। हम प्रकृति आधारित समाधान ऊपर पर्याप्त निवेश नहीं करेंगे तो उसका असर शिक्षा,स्वास्थ्य और रोजगार जैसे अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों की प्रगति पर पड़ेगा। यदि हम अभी पर्यावरण को नहीं बचाते तो हम सतत विकास के लक्ष्य को भी हासिल नहीं कर पाएंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. downtoearth.org.in/hindistory/wildlifebiodiversity/forest/investments-in - nature-besed solutions-need-to triple by 2030-77164
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7498239/
3. https://ww.amarujala.com>blog.(22, April,2020)
4. Improves the situation of environment.Jagran.com/editorial/ apni baat.pandemic-covid-19,(Jagran-special-20242327.html)